संपादकीय/Editorial

हमें गर्व है कि हमारा यह विशेषांक कौशल और व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे उत्कृष्ट कार्यों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रकाशित हो रहा है और खास बात यह है कि हम यह सब हिंदी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। हिंदी जैसी मातृभाषाओं में शिक्षा एवं इसमें हो रहे नवाचार का दस्तावेजीकरण करने का एक विशेष महत्व है। यह केवल भाषा का सम्मान ही नहीं, बल्कि ज्ञान के आदान–प्रदान को और भी सरल और सुलभ बनाता है, खासकर उस विशाल आबादी के लिए जो स्थानीय भाषाओं में अधिक सहज महसूस करती है। भारत में कौशल और व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को समझना आज पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) ने इस दिशा में एक क्रांतिकारी कदम उठाया है, जिससे यह स्पष्ट हो गया है कि हर विद्यार्थी के पास न केवल शैक्षणिक ज्ञान हो, बल्कि रोजगारपरक और तकनीकी कौशल भी हो। यह नीति केवल कागजों तक सीमित नहीं है, बल्कि वास्तविक जीवन में युवाओं को सशक्त बनाने के लिए एक मजबूत आधार तैयार कर रही है।

हाल ही में, श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय ने 14 जून 2024 को ''तकनीक और कौशल शिक्षा की परिवर्तनकारी गतिशीलता'' विषय पर हिंदी भाषा में एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन का उद्देश्य तकनीकी और कौशल शिक्षा की बदलती प्रकृति का पता लगाने के लिए वैश्विक संवाद और सहयोग के लिए मंच प्रदान करना था। यह हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की दिशा में एक गंभीर और महत्वाकांक्षी प्रयास है। नीति यह सुनिश्चित करती है कि इंजीनियरिंग और मेडिकल की पढ़ाई का विकल्प हिंदी में भी मिल सके।

इस सम्मेलन ने विश्व भर के विद्वानों को इंजीनियरिंग, विज्ञान, प्रबंधन, मानविकी और कृषि के क्षेत्र में हो रहे नवीन प्रयोगों को जानने का अवसर प्रदान किया। इसमें तेजी से बदलती दुनिया की मांगों को पूरा करने के लिए शैक्षिक सामग्री और शिक्षण पद्धति पर चर्चा की गई। सम्मेलन ने पाठ्यक्रम उन्नयन, स्किल इकोसिस्टम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन, तकनीकी एवं कौशल शिक्षा के बदलते स्वरूप, और छात्र सहभागिता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान केंद्रित किया।

राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क और राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क ने कौशल आधारित शिक्षा को उच्च शिक्षा के समकक्ष मान्यता दी है। NCRF के तहत, छात्रों को उनके कौशल आधारित पाठ्यक्रम के लिए भी क्रेडिट दिए जाते हैं, जो उन्हें उच्च शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में समान अवसर प्रदान करते हैं। यह कदम न केवल भारत के युवाओं को रोजगार के लिए सशक्त बनाता है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर भी बनाता है।

श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय कौशल विकास की एक अनुपम प्रयोगशाला है, जिसका उद्देश्य विकसित भारत का लक्ष्य प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान देना है। माननीय राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में हिस्सा लिया और तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा में सर्वोत्तम प्रथाओं और नवीन दृष्टिकोणों पर आधारित शोध पत्रों को दो श्रृंखलाओं में प्रकाशित करने का निर्देश दिया, जो तकनीक एवं कौशलशिक्षा की रूपरेखा तैयार करने में मददगार साबित होंगी।

कौशलशिक्षा के प्रति समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना बहुत आवश्यक है। यह धारणा कि केवल डिग्री आधारित शिक्षा ही उन्नति का मार्ग है, आज के वैश्विक और तकनीकी युग में अप्रासंगिक हो चुकी है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके कुशल मानव संसाधन पर निर्भर करती है, और भारत जैसे युवा राष्ट्र के लिए यह और भी अधिक महत्वपूर्ण है।

इस पत्रिका के माध्यम से हमारा उद्देश्य है कि हम कौशलशिक्षा से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवों, सफलताओं, और चुनौतियों को एक मंच प्रदान करें। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि कौशल आधारित शिक्षा को हर विद्यार्थी के लिए एक मुख्यधारा की शिक्षा के रूप में देखा जाए, ताकि भारत का हर युवा आत्मनिर्भर और सशक्त बन सके।

– प्रो. रणधीर सिंह राठौड़
अधिष्ठाता
श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय